बाइबल परमेश्वर का वचन है

बाइबल परमेश्वर का वचन होने का दावा करती है। इसके पन्नों में दो हज़ार से अधिक बार, हमें ''यहोवा ने कहा'' अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप मिलते हैं। इब्रानियों 1:1, 2 हमें बताता है कि ''... परमेश्वर ने ... बातें कीं ...।'' दूसरा पतरस 1:21ख कहता है कि ''भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।'' पवित्र शास्त्र परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा से दिया गया है: ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

कई लोग बाइबल को केवल एक अच्छी पुस्तक मानते हैं परन्तु इसे परमेश्वर की प्रेरणा से नहीं मानते। वास्तव में ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि यदि यह परमेश्वर का वचन नहीं है, तो फिर यह एक धोखा है।

क्या ये विश्वास करने के कुछ कारण हैं कि बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ वचन है ? हमारा मानना है कि ऐसे कई कारण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि यह परमेश्वर का वचन है ! इस पाठ में उनमें से कुछ कारणों की व्याख्या की गई है।

पहले हम उन कारणों पर विचार करेंगे जिन्हें ''आन्तरिक प्रमाण'' कहा जाता है। बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से होने के प्रमाण देती है। बाइबल में विश्वास बढ़ाने के ढंगों में से एक सबसे अच्छा तरीका है, इसे पढ़ना।

पवित्र बाइबल की एकता व सामंजस्य

जिस पुस्तक को पवित्र बाइबल कहा जाता है उसे छियासठ पुस्तकों को संकलित करके छापा गया है। ये सभी पुस्तकें एक ही समय में नहीं लिखी गई थीं। उन्हें लगभग चालीस विभिन्न व्यक्तियों द्वारा, लगभग सोलह सौ से अधिक वर्षों के अन्तराल में लिखा गया था। इन सभी व्यक्तियों ने विभिन्न विषयों पर अलग-अलग दृष्टिकोण से लिखा था।

अन्ततः, इन सभी पुस्तकों को एकत्र करके एक जिल्द में बांध दिया गया। इसे पढ़कर व्यक्ति इस तथ्य से प्रभावित हो जाता है कि *पवित्र बाइबल एक ही पुस्तक है!* पूरी पुस्तक में सामंजस्य, एकता तथा अविरोध दिखाई देता है। इसकी बातें एक दूसरे के प्रतिकूल होने के बजाय एक दूसरे की पूरक तथा अनुपूरक भी हैं।

मान लीजिए कि वैज्ञानिकों का एक दल इसी ढंग से एक पुस्तक बनाने की कोशिश करता है। आपको क्या लगता है कि इस प्रयास का परिणाम क्या होगा? ऐसी पुस्तक में परस्पर विरोधों की भरमार होगी। हां, ऐसी विभिन्न परिस्थितियों व अलग-अलग लोगों द्वारा बनाई गई पुस्तक की एकता इन लोगों के अलौकिक मार्गदर्शन का ज़ोरदार समर्थन करती है।

भविष्यवाणियां और उनका पूरा होना

आन्तरिक प्रमाण की बात जो शायद बाइबल के पाठकों को सबसे अधिक प्रभावित करती है वह है इसके लेखकों द्वारा दिखाया गया अद्‌भुत पूर्वज्ञान। उन्होंने भविष्य में होने वाली घटनाओं को इतना सही-सही लिखा जैसे कि वे इतिहास की बातें लिख रहे हों। प्रमाण की कड़ी में यह एक मजबूत जोड़ बन जाता है। पुराने नियम के शास्त्र में तीन अद्‌भुत किस्मों की भविष्यवाणियां मिलती हैं।

राष्ट्रों के उदय तथा पतन और नगरों के विनाश से सम्बन्धित भविष्यवाणियां

यहोशू 6:26 की भविष्यवाणी पांच सौ वर्षों से अधिक समय के बाद पूरी हुई थी। हम इसके पूरा होने को 1 राजा 16:34 में पढ़ते हैं। नहूम और सपन्याह दोनों ने ही नीनवे के विनाश की पूर्वसूचना दी थी। यशायाह ने बाबुल के गिरने की भविष्यवाणी की थी और राजा कुस्त्रू के जन्म से पूर्व उसके नाम की भविष्यवाणी कर दी थी (यशायाह 45:1)। दानिय्येल ने संसार के राज्यों के क्रमिक उदय तथा पतन की भविष्यवाणी की थी (दानिय्येल 2)। यरूशलेम के विनाश से पूर्व यीशु द्वारा इसकी जानकारी दे दी गई थी (मत्ती 24)।

यहूदी कौम के बारे में भविष्यवाणियां

राज्य की स्थापना से तीन सौ वर्ष पूर्व, व्यवस्थाविवरण 28:36 में इस्राएल के राजा की पूर्वसूचना दे दी गई थी। इसी आयत में बाबुल के दासत्व में होने से आठ सौ से अधिक वर्ष पूर्व इसकी भविष्यवाणी कर दी गई थी। यिर्मयाह ने यह कहकर कि इस्राएल को देखकर लोग भयभीत होंगे और ताली बजाएंगे, इसके उजड़ने की पूर्वसूचना दे दी थी (यिर्मयाह 25:9)। मूसा ने भी भविष्यवाणी की थी कि इस्राएल दृष्टांत और शाप का कारण समझा जाएगा (व्यवस्थाविवरण 28:37)। अगले युगों में इस्राएल का इतिहास पुराने नियम के लेखकों को परमेश्वर की प्रेरणा होने की सबसे मजबूत गवाही है।

यीशु के विषय में भविष्यवाणियां

सामान्यतः किसी व्यक्ति की जीवनी उसकी मृत्यु के पश्चात लिखी जाती है, परन्तु

यहां एक ऐसा आदमी है जिसके जीवन की कहानी मुख्यत: उसके जन्म से पूर्व लिखी गई थी। पुराने नियम के सैकड़ों विवरण यीशु नासरी से सम्बन्धित हैं। ये भविष्यवाणियां और उनके पूरा होने की ऐतिहासिकता पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर की प्रेरणा से बोलने और यीशु के ईश्वरीय होने को भी प्रमाणित करती हैं, जिसने उन्हें पूरा किया। हमें निम्न में से हर एक से सम्बन्धित भविष्यवाणियां मिलती हैं:

1. उसकी वंशावली (उत्पत्ति 3:15; 12:3; 49:10; यशायाह 11:1; यिर्मयाह 23:5)
2. उसका जन्म (यशायाह 7:14; मीका 5:2)
3. उसका जीवन (यशायाह 53:3-9; होशे 11:1)
4. उसकी मृत्यु (भजन संहिता 22:16-18; 34:20; यशायाह 53:9)
5. उसका गाड़ा जाना (यशायाह 53:9)
6. उसका पुनरुत्थान अर्थात जी उठना (भजन संहिता 16:10)
7. उसका स्वर्गारोहण (भजन संहिता 68:18)

इस प्रकार पृथ्वी पर आने से पहले ही, हमें उसके जीवन की कहानी मिलती है। मुझे ऐसा कभी कुछ नहीं मिला जिससे इन भविष्यवाणियों में दिए गए मजबूत तर्क का विरोध हो सकता हो!

बाइबल की यथार्थता

बाइबल तथा विज्ञान के बारे में हाल ही के वर्षों में बहुत कुछ कहा गया है। कुछ लोगों ने बाइबल को एक तरफ रखने की तैयारी कर ली है क्योंकि उन्होंने सुना है कि यह वैज्ञानिक सत्यों से असहमत है। इसके विपरीत, बाइबल की शिक्षाओं तथा वास्तविक ज्ञान में कोई विरोध नहीं है।

बाइबल और विज्ञान की चर्चा में दो बातें सामने आती हैं। पहली, बाइबल में कोई वैज्ञानिक गलती नहीं है। हो सकता है कि पहली बार विचार करने पर, बाइबल के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का प्रमाण महत्वपूर्ण न लगे। परन्तु, जब हम बाइबल के लिखे जाने के दिनों में पाई जाने वाली गलतियों का स्मरण करते हैं, तो हमें मानना ही पड़ेगा कि इस पुस्तक में ऐसी गलतियों का न होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। मैं बाइबल में उस सब के कारण भी विश्वास करता हूं जो इसमें *नहीं* है! यदि इसके लेखकों को आत्मा से प्रेरणा न मिली होती, तो यह कैसे हो सकता था कि उस ज़माने में इतनी बहुतायत से पाई जाने वाली भद्दी भूलें और मूर्खतापूर्ण विचार पवित्र शास्त्र में न मिलते? इस विचार का कि बाइबल के लेखकों ने केवल अपने जमाने की बुद्धि को ही लिखा, इस बात से ही खण्डन हो जाता है।

दूसरी, बाइबल के लेखकों ने विज्ञान के उन सत्यों को भी लिखा है जिन्हें उस समय तक मनुष्य के दिमाग ने खोजा नहीं था। गोल पृथ्वी, गुरुत्वाकर्षण का नियम, और उत्तर

दिशा में खाली स्थान अनखोजे सत्यों के कुछ ऐसे उदाहरण हैं जो बाइबल में ही दिए गए हैं (यशायाह 40:22; अय्यूब 26:7)। हम फिर 2 पतरस 1:21 में दिए गए निष्कर्ष पर आने को बाध्य हैं: ''क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।'' बिना ईश्वरीय प्रेरणा के ये लोग इन बातों को नहीं जान सकते थे! उन्हें पवित्र आत्मा द्वारा लिखने की प्रेरणा मिली थी! कुछ लोगों को विज्ञान की रोशनी में बाइबल को पढ़ने से डर लग सकता है, परन्तु बाइबल को किसी से डरने की आवश्यकता नहीं है! ऐसी कुठाली से निकलकर यह हमारे लिए पहले से भी अधिक मूल्यवान हो जाती है।

सारांश

बाइबल संसार की सबसे अधिक प्रिय और सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है। यद्यपि इसके लिए कुछ लोगों ने अपने प्राण भी दे दिए हैं,परन्तु इससे घृणा करने वालों की भी कमी नहीं है। शत्रुओं ने इसके मिट जाने की भविष्यवाणियां की थीं, परन्तु यह अविनाशी है। यह आग, तलवार व हर उस शक्ति का जो इसके विरुद्ध है, सामना करके भी कायम है।

इतनी आयु होने के बावजूद भी, बाइबल की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। इसमें कभी भी सुधार की आवश्यकता नहीं पड़ी। यह पूरी तरह से विकसित, हर युग के सब मनुष्यों के लिए तैयार की गई पुस्तक है। इसके अलौकिक मूल का यह एक और मजबूत प्रमाण है। यह हमेशा ही प्रासंगिक रही है। आकाश और पृथ्वी टल जाएं, तौभी परमेश्वर का वचन सर्वदा बना रहेगा (यशायाह 40:8; 1 पतरस 1:25)।